

Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

Aquifer Open Study Notes (Book Intros)

This work is an adaptation of Tyndale Open Study Notes © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Study Notes, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عَرَبِيٌّ), French (Français), Hindi (हिन्दी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

MIC

मीका

मीका

परमेश्वर का न्याय इस्ते भविष्यवक्ता औं, इसाएल के भटके हुए अगुवों, और उन धनियों के विरुद्ध आने वाला था जो दरिद्रों को दबाते थे। परमेश्वर का अपने लोगों के विरुद्ध अभियोग उनके विनाश का कारण बना, लेकिन विनाश के बाद पुनःस्थापन होगा। मीका के माध्यम से, परमेश्वर की आत्मा ने इसाएल के भविष्य के लिए आशा का एक मजबूत संदेश प्रदान किया। यहोवा ने इसाएल के बचे हुए लोगों को बचाने का वचन दिया—वे परमेश्वर के नए लोगों के रूप में अपनी भूमि पर लौटेंगे। परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को पराजित करने और बैतलहम से अपने शासक को भेजने का वचन दिया। मीका सरल लेकिन शक्तिशाली रूप से उद्घोषणा करते हैं कि यहोवा जैसा कोई परमेश्वर नहीं है।

संदर्भ

मीका ने अपनी भविष्यवाणियाँ दक्षिणी राजाओं योताम (750-732 ई.पू.), आहाज (743-715 ई.पू.), और हिजकियाह (728-686 ई.पू.) के शासनकाल के दौरान दीं, जिनका शासनकाल तुलनात्मक रूप से लंबा था। उस समय, इसाएल और यहूदा दोनों नैतिक और धार्मिक भ्रष्टाचार, सामाजिक उत्पीड़न, राजनीतिक षड्यंत्र, आर्थिक अन्याय, व्यक्तिगत दुर्गुण, धोखाधड़ी, और विश्वासघात से प्रभावित थे।

योताम एक मध्यम स्तर के अच्छा राजा था, लेकिन उन्होंने ऊँचे स्थानों को नहीं गिराया जहाँ मूर्तियों की अवैध उपासना यस्त्वलेम के मन्दिर में परमेश्वर की उचित आराधना के साथ प्रतिस्पर्धा करती थी। चूंकि यहोवा योताम के शासन से पूरी तरह से प्रसन्न नहीं थे, उन्होंने अराम के राजा पेकह को यहूदा पर दबाव डालने के लिए उठाया (2 रा 15:32-38)।

आहाज, योताम के पुत्र, इसाएल के उत्तरी राजाओं के दुष्ट तरीकों का अनुसरण करते थे। उसने निषिद्ध प्रथाओं में भाग लिया, जिसमें बालकों की बलि, अन्यजातियों की धूप जलाना, और उर्वरता की आराधना शामिल थी (2 रा 16:1-4)। जब एदोमियों और पलिश्तियों ने रसीन और पेकह द्वारा विजय प्राप्त दक्षिणी पलिश्तीन के क्षेत्रों में प्रवेश किया (2 रा 16:5-6, इति 28:18), आहाज ने अश्शूर के राजा तिगलत्पिलेसेर

III (744-727 ई.पू.) के साथ एक गठबंधन किया, मन्दिर और शाही खजानों से सोना देकर अश्शूरियों को भेट के रूप में धन दिया (2 रा 16:7-9)। आहाज ने यस्त्वलेम में अन्यजातियों की वेदियों को लाकर (2 रा 16:10-13), यहूदा की आराधना को भ्रष्ट किया और यहोवा की आराधना को बाधित किया (2 रा 16:14-20)।

अपने पिता आहाज के विपरीत, हिजकियाह एक धर्मी राजा थे। उसने सामरिया के पतन (722 ई.पू.) को शल्मनेसेर V (726-722 ई.पू.) और सर्गोन II (721-705 ई.पू.) के अधीन असीरियों के हाथों देखा। उनके शासनकाल के दौरान, 701 ई.पू. में, परमेश्वर ने यस्त्वलेम को राजा सन्हेरीब के हाथों विनाश से बचाया, जो अश्शूर (704-681 ई.पू.) के राजा थे, लेकिन सन्हेरीब ने इसाएल और यहूदा के लगभग छियालीस शहरों को नष्ट कर दिया (2 रा 18:1-19:37)। परमेश्वर ने हिजकियाह को एक गंभीर बीमारी से भी चंगा किया। लेकिन फिर हिजकियाह ने अविवेकपूर्ण तरीके से बाबेली राजा मरोदक-बलदान के द्वारों का स्वागत किया, जो अश्शूर के विरुद्ध हिजकियाह के साथ गठबंधन चाहते थे (2 रा 20:12-21)।

इस अवधि के प्रारंभिक वर्षों के दौरान, सामरिया के विनाश से पहले, इसाएल के उत्तरी राजा पेकह (752-732 ई.पू.) और होशे (732-722 ई.पू.) थे। दोनों राजाओं के अधीन, इसाएल यारोबाम I के मार्गों में और अधिक भटक गया, जिन्होंने इसाएल को परमेश्वर से दूर कर दिया था (2 रा 15:28)। पेकह के शासनकाल के दौरान, उत्तरी इसाएल के कुछ हिस्सों को बन्दी बना लिया गया था (2 रा 15:29)। पेकह की हत्या होशे द्वारा की गई थी, जो 722 ई.पू. में सामरिया के पतन तक शासन करते रहे (2 रा 15:30-31; 17:6)।

जैसा कि मीका ने चेतावनी दी थी, उत्तरी राज्य इसाएल नष्ट हो गया और उसके लोग बँधुआई में ले जाए गए। होशे ने अश्शूर के विरुद्ध विद्रोह किया था और मिस से सहायता की विनती की थी, लेकिन जब शल्मनेसेर V को होशे के विश्वासघात के बारे में पता चला, तो उसने सामरिया को धेर लिया, उसे अधीन कर लिया, और 722 ई.पू. में तीन साल की धेराबंदी के बाद उसे नष्ट कर दिया। होशे को कैद कर लिया गया, इसाएलियों को अश्शूरी प्रांतों और अधीनस्थ राज्यों में बिखेर दिया गया (2 रा 17:5-6), और विभिन्न राष्ट्रों के लोगों को इसाएल की नष्ट भूमि में बसने के लिए लाया गया (2 रा 17:24-41)।

इस्माएल की झूठी आराधना ने उसके विनाश और यहोवा द्वारा अस्वीकृति का कारण बना।

सारांश

शीर्षक के बाद ([1:1](#)), तीनों खंडों की शुरुआत इस्माएल को “सुनने” के लिए बुलाने से होती है ([1:2-2:13; 3:1-5:15; 6:1-7:6](#))। न्याय यहोवा से मीका की भविष्यवाणियों के माध्यम से सामरिया, यरूशलेम, धनी, भ्रष्ट, झूठे भविष्यवक्ताओं, अत्याचारी अगुवों और अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध उंडेला गया। इस्माएल के लोग परमेश्वर के मार्गों का अनुसरण करने में असफल रहे और उन संदेशों का जवाब नहीं दिया जो उन्होंने उनके द्वारा दिए थे। यहोवा का अभियोग अटल था: इस्माएल नष्ट हो जाएगा और बँधुआई में चला जाएगा।

मीका का न्याय का संदेश आशा के शब्दों के साथ मिश्रित है, हालांकि (देखें [2:12-13; 4:1-8, 13; 5:2-15; 7:7-20](#))। अंत में, न्याय यहोवा के अनुग्रह, अटूट प्रेम, विश्वासयोग्यता, क्षमा, क्षमादान और करुणा से परिवर्तित हो जाएगा। इस्माएल को पुनर्स्थापित और नया किया जाएगा, और परमेश्वर अब्राहम और याकूब से किए गए अपने प्रतिज्ञाओं को पूरा करेंगे।

लेखक और तिथि

मीका मोरेशेत का एक निवासी था, जो यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिम में लगभग इक्कीस मील (पैतीस किलोमीटर) की दूरी पर स्थित एक शहर है। [4:6-8](#) और [7:8-20](#) जैसे अंश कुछ लोगों को सुझाव देते हैं कि एक बाद के संपादक ने पुस्तक के वर्तमान रूप को प्रारंभिक उत्तर-निर्वासन उपरांत अवधि (538-458 ई.पू.) में पूरा किया। हालांकि, यह निष्कर्ष आवश्यक नहीं है। भविष्यद्वक्ता मीका एक मात्र पूर्व-निर्वासन भविष्यद्वक्ता नहीं हैं जिसने वापसी की भविष्यवाणी की (देखें [यशा 52:4-12; होश 11:10-11; आमो 9:11-15](#))।

मीका ने घटनाओं का वर्णन करने के लिए आलंकारिक भाषा का उपयोग किया, जिससे यह निर्धारित करना कठिन हो जाता है कि जब उन्होंने भविष्यवाणी की और लिखा, तब वास्तव में क्या परिस्थितियाँ थीं। मीका की कुछ भविष्यवाणियाँ संभवतः 722 ई.पू. में सामरिया के विनाश से पहले दी गई थीं (देखें [मीक 1:1, 6; 6:16](#))। 701 ई.पू. में इस्माएल और यहूदा में अशूरी आक्रमण का उल्लेख [1:10-15](#) में है। यरूशलेम के पतन के बारे में मीका की भविष्यवाणी ([3:12](#)) हिजकियाह के शासनकाल (728-686 ई.पू.) के दौरान दी गई थी और इसके बहुत बाद में यिम्याह द्वारा उल्लेख किया गया है ([यिम्य 26:16-19](#))। इस प्रकार मीका की सेवकाई यशायाह के साथ निकटता से मेल खाती प्रतीत होती है; [यशायाह 2:2-5](#) और [मीका 4:1-4](#) की समानता इस निष्कर्ष का समर्थन करती है।

अर्थ और संदेश

मीका का संदेश स्पष्ट है: परमेश्वर की योजनाएँ उनके लोगों के लिए सफल होंगी, और राष्ट्र परमेश्वर को उनके लोगों इस्माएल और उनके चुने हुए शासक के माध्यम से जानेंगे ([5:2](#))। यहोवा की अब्राहम और याकूब के प्रति विश्वासयोग्य प्रतिज्ञाएँ पूरी होंगी।

यशायाह की तरह, मीका ने धोषणा की कि इस्माएल की आशा न्याय से बचने में नहीं होगी, बल्कि यह उन्हें न्याय के माध्यम से प्रदान की जाएगी। लोग इतने भ्रष्ट हो गए थे कि उनके विस्तारित भविष्य की एकमात्र आशा न्याय की अग्नि के माध्यम से थी। यह इस्माएल के लोगों के लिए समझने के लिए एक अत्यंत कठिन अवधारणा थी।

परमेश्वर का उद्देश्य एक विशेष लोगों का होना है जिनकी नैतिक और आन्तिक अखंडता और उत्कृष्टता अनोखा हो। परमेश्वर इससे कम कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे, लेकिन केवल उनके कार्य ही उनके लोगों में धर्मिकता उत्पन्न कर सकते हैं (देखें [2 पत 3:13](#))। मीका के कई वर्षों बाद, परमेश्वर एक “इस्माएल का शासक” भेजेंगे, जो बैतलहम में जन्मे, अपनी भेड़-बकरियों का नेतृत्व करेगा और अपने लोगों को शांति प्रदान करेगा (देखें [मीक 5:2-5](#))।